PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES VOL 9, ISSUE 2

बाल कथा साहित्य एवं सामयिक सन्दर्भों की भूमिका

डॉ नवज्योत भनोत

हिंदी विभाग
डॉ भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय श्रीगंगानगर
(राजस्थान) भारत

सामयिकता साहित्य का गुण है। आज कहानी केवल मनोरञ्जन एवं आदर्शों का पाठ पढ़ाने का ही उपक्रम नहीं करती अपितु जीवन की विसंगतियों एवं यथार्थ का बोध कराते हुए उत्तरदायी स्थितियों पर भी प्रहार करती है और जीवन को उदात्त मूल्यों की ओर ले जाने का प्रयत्न करती है। सामयिकता की सार्थकता भी इसी में है कि वह समाज की विविधमुखी समस्याओं से साक्षात्कार करवाकर समुचित समाधान सुझाने में सहायक बनें। बाल साहित्य से भी यही अपेक्षा की जाती है कि वह केवल गौरवमय अतीत एवं उज्वल भविष्य की ही बात न करके वर्तमान विशेषतः तत्काल की कहानी कहते हुए जीवन की सच्चाइयों से परिचित करवाकर कल्पना द्वारा बने वैभव लोक की अपेक्षा कठोर व जीवंत यथार्थ से भरपूर चिन्तन का अवसर प्राप्त करवा सके। बाल-साहित्य में सामयिक सन्दर्भ बालकों में सजगता, सचेतता एवं संवेदनशीलता जागृत करने में सहायक सिद्ध होते हैं। सामयिक परिस्थितियों, गतिविधियों, घटनाओं एवं स्थितियों का ज्ञान बालक की मानसिक योग्यताओं को उर्वर बनाता है। अतः बाल साहित्य अत्यन्त सजगता एवं खोज के पश्चात ही लेखन कार्य की अपेक्षा करता है।

आज शासन, तन्त्र और व्यवस्था में प्रत्येक स्तर पर भ्रष्टाचार पनपता जा रहा है। प्रशासन, पुलिस, औद्योगिक प्रतिष्ठानों, नौकरियों सहित समाज के सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार का बोलबाला है।

वर्तमान बाल-कथा साहित्य में सामाजिक सन्दर्भों को आधार बनाकर अनेक रचनाएँ लिखी जा रही हैं। प्रेमचन्द गोस्वामी की 'झूठ के पाँव नहीं' कहानी में मन्त्री महोदय के दौरे के समय अधिकारियों की मन्त्रियों एवं बड़े अधिकारियों को प्रसन्न करने की प्रवृति पर प्रकाश डाला गया है। विकास अधिकारी सरकारी खजाने को लुटा कर छल व प्रपञ्च का सब्जबाग दिखाकर मन्त्री के समक्ष कृत्रिम खेती व झूठी खुशहाली का आदर्श प्रस्तुत कर जघन्य अपराध करता है। मन्त्री जी को माजरा समझ में आ जाने पर झूठा नकाब उतर जाता है और विकास अधिकारी के मस्तिष्क पर

छायी धुँध मिट जाती है। इस प्रकार मन्त्री के चरित्र की उदात्तता बालकों में राष्ट्रीय मूल्यों व देश के भविष्य के बारे में सोच को बढ़ाती हैं। इनकी एक अन्य कहानी 'पाप की कमाई' में भी रिश्वतखोरी की समस्या को उठाया गया है। श्रीकान्त आर्थिक तंगी के कारण पचास रूपये मात्र की रिश्वत लेता है किन्तु मन ही मन परेशान होकर उसे समायोजित करने का प्रयास करता है। किन्तु उसकी पत्नी आर्थिक तंगी के बावजूद अपने नैतिक मूल्यों को गिरने नहीं देती है। वह कहती है- 'इससे तो अच्छा होता कि आप किसी दोस्त से माँग लेते। किसी से ब्याज पर ले आते। मेरा कोई गहना गिरवी रखकर उठा लेते।' यहाँ श्रीकान्त की पत्नी आर्थिक विवशता में भी स्वार्थपरक जैविक मूल्यों के समक्ष नैतिकता को नगण्य नहीं होने देती। ऐसी कहानियाँ बालकों में आदर्श की भावना सञ्चरण करती है।

हमारे समाज में दहेज प्रथा, बाल-विवाह, अनमेल विवाह, छुआछूत, अन्धविश्वास इत्यादि कुरीतियाँ आज भी व्याप्त हैं। बाल कथा लेखकों ने इन समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए समाधान भी प्रस्तुत किये हैं। रचना गोस्वामी की 'समाज का दुश्मन दहेज' में शर्मा जी की लड़कियों को दहेज के कारण प्रताड़ना मिलती है। इसमें दहेज के लोभियों द्वारा किए गए अत्याचारों का वर्णन है। लेखक ने समस्या के समाधान के रूप में लड़कियों को व्यापार एवं नौकरी के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता को महसूस किया है। उनके अनुसार अन्तर्जातीय विवाह भी समस्या का समाधान कर सकते हैं। रचना जी ने बाल-विवाह को समाज का कोढ़ बताते हुए इस प्रथा के लिए दहेज प्रथा एवं समाज की मान्यताओं को दोषी ठहराया है। बाल-विधवा की समस्या भी बाल विवाह के कारण ही बढ़ रही है। लेखिका ने इसका कारण अशिक्षा व धर्मान्धता को माना है, जो देश एवं समाज की जड़ों को खोखला कर रही है। भारत में होने वाले सामूहिक विवाह में नन्ही बालिकाएँ जीवन एवं विवाह का अर्थ ही नहीं जान पाती। लेखिका का मत है कि लड़कियों की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए जिससे वे जागरूक होकर इन कुरीतियों का विरोध कर सकें। इसके अतिरिक्त बाल-विवाह को रोकने वाले शारदा एक्ट 1919 जैसे कानून की जानकारी देते हुए समाज के लोगों से जागृत होने की आशा भी की गई है कि कानून का उल्लंघन करने वाले की सूचना सरकार को देकर अपराधी को कड़ी सजा दिलवाएँ।

इसी प्रकार प्रेमचन्द गोस्वामी की 'जात-पाँत अभिशप्त' है कहानी में व्यापारी लाला सोमनाथ भी रूढ़िवादी विचारधारा के है जो अमीर व अपनी जाति में बच्चों के सम्बन्ध तय करने में खानदान की इज्जत समझते हैं। किन्तु आधुनिक विचारधारा के बच्चे बाप की पूँजी का मोह त्याग कर, जाति-पाँती व ऊँच-नीच के बन्धन तोड़कर अपनी इच्छानुसार विवाह करके स्वतन्त्र अस्तित्व की स्थापना करते हैं। इस कहानी में दो पीढ़ियों के अन्तर को दर्शाते हुए अन्त में लाला सोमनाथ को नई पीढ़ी के विचारों से समझौता करने वाले परिवर्तनशील व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है जो मानवता से नाता जोड़ते हुए कहते है- जिन्दगी का सच्चा सुख धन दौलत और खानदान में ढूँढ़ना चाहा था। जाति-पाति की दीवार खड़ी करके खुद को बच्चों से दूर कर लिया लेकिन आज मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि जात-पाँत अभिशाप है। सच्चा सुख हर जाति के आदमी से प्रेम करने में है।'[१]

लाला का हृदय परिवर्तन निश्चित तौर पर बालकों में मानवता वादी दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक हो सकता है। रचना गोस्वामी की कहानी 'छुआछूत अभिशाप है' में गोस्वामी विवेकानन्द एवं महात्मा गाँधी के माध्यम से छुआछूत को छोड़ने की प्रेरणा दी है। लेखिका ने महाराष्ट्र के एक गाँव के उदाहरण से यह सिद्ध किया है कि इस बुराई

को समूल नष्ट करने के लिए मानसिक दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना चाहिए। 'बड़ी बुराई अन्धविश्वास कहानी में रचना गोस्वामी ने पण्डितों एवं झाड़फूँक करने वाले के चक्कर में फंसकर होने वाले अहित को स्पष्ट किया है। राजेश का इकलौता बेटा पण्डितों के चक्कर में निमोनिया का शिकार होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। लेखक ने इस पिछड़ेपन, अन्धविश्वास का कारण अशिक्षा बताते हुए सचेत किया है कि सुख-दुःख को जीवन का सामान्य अंग मानकर उसका उचित इलाज करवाना चाहिए। इनसे घबराकर झाड़-फूँक, टोने-टोटके में फैंस कर समस्याओं को और नहीं उलझाना चाहिए। इसी प्रकार 'वर्षा बरसाने वाला बाबा' भी लोगो की अज्ञानता का लाभ उठाकर उन्हें दिगभ्रमित करता है। अकाल की समस्या से जूझते ग्रामीण वर्षा का लालच देकर ठगने वाले अवधूत बाबा एवं चेलों के बहकावे में आ जाते हैं। वह ईश्वर को मनाने के लिए दस हजार रूपया इकट्ठा करके रात्रि को गाँव वालों को झाँसा देकर भाग जाता है। इस प्रकरण में दसवी पास युवक सोनू अवधूत का विरोध करके जागृति का परिचय देता है, किन्तु अन्त में गाँव वाले पुलिस की सहायता से अवधूत बाबा को पकड़ने में कामयाब हो जाते है। किन्तु गाँव वाले अवधूत से जब्त किए रूपयों से मंदिर बनाने की बात कहते हैं. तो एक बार फिर सोनू का विरोध मुखरित हो उठता है ओर कहता है-"हमें नया मन्दिर बनाना चाहिए सहकारिता का! हम सहकारी संस्था बनाकर बैंक से कर्ज ले लेंगे। इस प्रकार सहकारिता से कर्ज लेकर, कुआँ खोदा गया। बीज मिलने लगा। गोचर भूमि बना दी गई। आदर्श गाँव हो गया। ऐसी कथाएँ बालकों को अन्धविश्वासों से बचाकर चेतनाशीलता के गुण का बीजारोपण करती है।

शान्ति भट्टाचार्य की एक अन्य कहानी 'असली भूत कौन" में भी अशिक्षा एवं अज्ञान के फलस्वरूप उत्पन्न कुरीतियों पर प्रहार किया गया है 'सेवकराम' नामक चमत्कारी बाबा ग्रामीण जनता को रोग एवं प्रेतों से मुक्ति दिलाने का आश्वासन देकर ठगता है। माधोराम साहस एवं धैर्य से काम लेते हुए अपने थानेदार दोस्त सोहन से मिलकर ढोंगी बाबा का भण्डा फोड़ कर गाँव वालो को अन्धविश्वासों से मुक्ति दिलाने में सफल सफल होता है। डॉ. रोहिताश्व अस्थाना कहानियों में वैज्ञानिकता का आधार लेकर अंधविश्वासों व रूढ़िवादिता से दूर रहने की सलाह दी गई है। वे मानते हैं कि बच्चों में संस्कार डालकर अंधविश्वासों की छाप को समाप्त किया जा सकता है। नीम-हकीम कहानी में डॉक्टर साहब लड़के को डबल निमोनिया की बीमारी परखकर धन्नू को फटकारते है-"झाड़ फूंक के चक्कर में अगर दो घंटे और देर से आते तो लड़का हाथ से निकल जाता।[२] और वे इन्जेक्शन लगाकर लड़के की बीमारी पर नियन्त्रण करता है। इन्हीं की 'भूत से टक्कर' कहानी भी भूत प्रेतों की अवधारणा को निर्मूल सिद्ध करती है। कादिर और दीनू सूअर चराते समय आंधी आ जाने के कारण भटक कर मरघट पर पहुंच जाते हैं और आंधी के कारण पैर उखड़ जाने पर एक-दूसरे को भूत समझकर उलझ पड़ते है । आंधी थमने पर उनका भ्रम टूटता है तो "सभी का हँसते-हँसते बुरा हाल था। पड़ौस के काजी ने यह निष्कर्ष निकाला कि दरअसल भूत-प्रेत कुछ नहीं होते। यह सब हमारे मन का भ्रम और भय होता है, जिसके कारण हम ऐसे अंधविश्वासों में फँस जाते है।"३ इनकी दीपक की चोरी कहानी भी अंधविश्वास के कारण बिना मेहनत किए परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए लड़की काली माँ के मन्दिर में जलता हुआ दीपक फ्राक में छिपा लेती है। फ्राक में आग लग जाने के कारण महीनों उसका ईलाज चलता है और वह अंधविश्वासों को छोड़ कभी ऐसा न करने का संकल्प लेती है। ये कहानियाँ बालकों में स्वस्थ वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होती है। वे विवेकी बनकर अन्धविश्वासों को त्याग कर समस्या के उचित समाधान तक आसानी से पहुँच पाते हैं। इसके अतिरिक्त रचना गोस्वामी ने 'बुरी आदतें बहुत बुरी' कहानी में सामयिक समस्याओं जैसे मध्यपान, नशा, जुए इत्यादि से होने वाली

हानियों को बताया है कि जो लोग शराब को शक्ति सञ्चार का माध्यम मानते हैं ऐसे लोगों को अपनी धारणाएँ एवं मान्यताएँ बदलनी होंगी। वे समाज में यह सन्देश सञ्चरित करती हैं कि बुरी आदतों में लिप्त व्यक्ति पल भर में हँसते जीवन को बर्बाद कर धन-दौलत, मान-ईमान सब खो देता है। प्रेमचन्द गोस्वामी की 'जुआरी की पगड़ी' कहानी में व्यापारी सेठ अपने लड़के की जुआ खेलने की आदत के कारण सबक सिखाने के उद्देश्य से मृत्यु के पश्चात शहर के बड़े जुआरी से पगड़ी बन्धवाने की इच्छा जाहिर करता है, और जुआरियों के मुख से जुए के कुपरिणामों को सुनकर बर्बाद होने से बच जाता है। इनकी अन्य कहानी 'बलि बुरी है' भी अज्ञान के कारण उत्पन्न हुई समस्याओं का कारण बताते हुए निवारण भी प्रस्तुत करती है। सूदखोर टीकम की पत्नी को निःसन्तान होने के कारण ढोंगी महात्मा रानी को बलि देने के लिए उकसाता है। किन्तु रानी के बाल-रक्त से नहाने के लिए मना करने पर वह अपनी चाल बदल देता है और उसे अमावस की रात गहने पहन नकदी लेकर बिना किसी को खबर किए आने को कहता है। सन्तान के लोभ में पड़कर रानी ऐसा करने को तैयार होती है तो टीकम आहट से जग जाते हैं व सब कुछ समझ कर पहलवानों द्वारा साधु बने लालू को पुलिस के हवाले सौंप देता है और गाँव की शिक्षक रानी बहन को शहर जाकर ईलाज कराने की सलाह देता है। जिसे मान रानी सन्तान सुख प्राप्त करती है और लेखिका कहानी द्वारा सन्देश प्रेषित करती है कि अन्धानुकरण में पड़कर बलि जैसा जघन्य कर्म न करके विकसित चिकित्सा प्रणाली को अपनाकर, लाभ लेना चाहिए।

प्रेमचन्द गोस्वामी की 'गृहलक्ष्मी की सूझ' कहानी सहकारी खेती जैसे सामाजिक सन्दर्भो को उकेरती हुई मजदूर किसानों में आई जागृति के बारे में बताती है। किसना की बहू लक्ष्मी ग्राम सेविका से सहकारी खेती के फायदे सुनकर अपने पति को बताती है। उसकी बात मानकर वह अपनी दो बीघा जमीन में बिरजू काका, केसोराम, ननकू दादा इत्यादि से मिलकर सहकारी बीज गोदाम से बाजरा व मक्का के उन्नत बीज खरीदकर, सहकारी कृषि कारखाने से औजार खरीदकर नई तकनीक से खेती करके सहकारी समिति द्वारा ही मण्डी तक पहुँचाता है। ऐसी कहानियाँ कृषि की नवीन व आधुनिक पद्धतियों के प्रचार-प्रसार एवं कृषकों में श्रम एवं सहयोग की सहकारी खेती के माध्यम से नवीन चेतना प्रस्फुटित करती हैं। इनकी 'सहजीवन की राह में' कहानी भी ग्रामीणों में शिक्षा के प्रति जागरण का उद्घोष करती है। एक छोटे से गाँव की चौपाल में हरिया गाँव में स्कूल न होने से बालकों के बिगड़ने का कारण बताता है। शहर से ड्राफ्टमैन का कोर्स करके लौटने वाला रामूदादा का बेटा जगदीश भी सभी गाँव वालों के साथ नई पीढ़ी के कल्याण हेतु जुट जाता है। जगदीश स्कूल न बनने तक शादी न करने का संकल्प लेकर ससुर की नाराजगी भी मोल लेता है। इस प्रकार ग्रामीण सहजीवन अपनाकर स्कूल तैयार कर लेते हैं जो उनकी शिक्षा के प्रति जागरूकता को दर्शाता है।

रोहिताश्व अस्थाना की बाल-कथाओं में भी सामयिक सन्दर्भों से साक्षात्कार करवाया गया है। उनकी कहानियाँ वैज्ञानिक एवं मनोविज्ञान के अनुकूल रची गई है। 'कोयल की सीख 'सुनो कहानी बगुनो कहानी' कथाओं में बालकों के स्तर पर उतरकर सामयिक बोध को प्रमाणित किया गया है। उदाहरणार्थ-" आजकल जैसे-जैसे आबादी बढ़ती जा रही है, शहर गाँवों की ओर खिसकते जा रहे हैं। शहर के आस-पास के बगीचे भी कटते जा रहे हैं। खेती योग्य भूमि पर शानदार मकान बनते जा रहे हैं। मनुष्य सचमुच बहुत चालाक हो गया है। अपनी निवास की समस्या को दूर करने के लिए वह हरे पेड़ों को काटता जा रहा है। पेड़ जो फल, फूल, छाया देने के साथ-साथ हमें प्रदूषण से बचाते हैं। धरती जो

हमारे लिये अन्न उगती है, हम उस पर ईंट-पत्थर,सीमेण्ट और चूने की इमारतें बनाते चले जा रहे हैं। ऐसे में पेड़ों पर रहने वाले पशु पक्षियों को भी घर से बेघर होना पड़ता है। परन्तु वे बेचारे क्या करें। आदमी के स्वार्थ के सामने उन्हें भी नतमस्तक होना पड़ता है।४ इनकी 'नीम हकीम' कहानी रूढ़िवाद, अन्धविश्वास, झाड़फूँक और नीम हकीमों के चक्कर में पड़ने से आगाह करती है तो 'भूत से टक्कर' एवं 'चमत्कारी अंगूठी' कहानी मिथ्याभ्रमों से निकलकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा प्रदान करती है।

आज के युग में पर्यावरण अत्यन्त संवेदनशील विषय है। मनुष्य आज अपनी आवश्यकता के लिए प्राकृतिक साधनों का निर्ममता से प्रयोग कर उसे नष्ट कर रहा है। जिससे पर्यावरण में असन्तुलन की स्थिति पैदा हो रही है। इसलिए पर्यावरण की रक्षा का चिन्तन करने के लिए 5 जून को पर्यावरण दिवस मनाकर मनुष्य व पौधो के अन्तर्सम्बन्ध की व्याख्या करने की योजना बनाई गई। हमारे बालकों को इस सामयिक विषय की जानकारी उषा गोयल ने 'हमारा पर्यावरण' पुस्तक लिखकर भली भाँति दी है। उन्होंने बालकों को सरल तरीके से बताया है कि पैड़-पौधे कार्बन-डाई-ऑक्साइड को सोख कर अपना भोजन बनाते हैं व वायुमण्डल में कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा नियन्त्रित रखते है, इसलिए हमें अधिक से अधिक पैड़-पौधे लगाने चाहिए। पर्यावरण के सम्बन्ध में एक चीनी कहावत का जिक्र करते हुए उन्होंने लिखा है कि "जो व्यक्ति अपना भविष्य केवल एक दिन के बारे में सोचता है वह फसल उगाता है जो दस साल आगे की सोचता है वह पेड़ लगाता है और जो उम्र भर सोचता है वो वन लगाता है। [५]

अनावश्यक ध्वनि विस्तार ऐसी समस्या है जिस पर बालकों का ध्यान कम जाता है उिषा गोयल'ने रोचकपूर्ण ढंग से ध्वनि की ईकाइयों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए पेड़ पत्तियों की ध्वनि की तीव्रता से लेकर, रेलगाड़ी, टेलीफोन, हमारी माँगें पूरी करो जैसे नारों, कारखानों की गड़गड़ाहट, इत्यादि के ध्वनि विस्तार को बातों ही बातों में बालकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। बालकों को तेज ध्वनि से होने वाली बीमारियों जैसे रक्त चाप, रक्त धमनियों में थक्के जमना व सिकुड़ना, श्वसनक्रिया, पाचन क्रिया एवं उदर में असन्तुलन इत्यादि के प्रति जागरूकता पैदा करने का कार्य किया गया है ताकि वे व्यक्तिक व सामाजिक दोनों स्तरों पर इससे बचने का प्रयास कर सकें। इनकी 'वायु प्रदूषण' कहानी में भी ऑक्सीजन को इंगित करने वाले तत्त्वों के बारे में जानकारी दी गई है कि जब हवा की गति रुक जाती है तथा वायुमण्डल की ऊपरी सतह पृथ्वी के पास वाली सतह की अपेक्षा अधिक गर्म हो जाती है तो हवा का ऊपर-नीचे का परिसंचरण कम हो जाता है। इसे काफी संख्या में लोग बीमार पड़ जाते हैं। जेट वायुयानों द्वारा छोड़े गये धुएँ में भी विभिन्न नाइट्रोजन ऑक्साइड की मात्रा इतनी अधिक होती है कि वातारण में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है जिससे पृथ्वी पर पहुँचने वाली अल्ट्रावायलेट किरणों की संरचना बढ़ जाती है, तथा किरणें स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालती है।६ इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में प्रदूषण रोकने के उपायों पर चर्चा की गई है। जैसे बड़े पैमाने पर सौर ऊर्जा उत्पादन, उद्योगों व मोटर गाड़ियों के विषाक्त पदार्थों के लिए उपकरण लगाना, औद्योगिक व आवासीय क्षेत्रों के बीच हरित पेड़ों की कतारें लगाना, वृक्षारोपण परियोजना को क्रियान्वित करना इत्यादि।

जनसंख्या की अबाध गति में वृद्धि, उपभोग में वृद्धि, शहरीकरण इत्यादि के कारण समाज में गम्भीर समस्याएँ पैदा हो गई है। समुद्रों में रसायन डाले जा रहे हैं और नदियों में पानी के साथ दूषित पदार्थ बहाकर पानी को विषाक्त कर रहे हैं। उषा जी' ने जैविक प्रदूषण, खाद्य प्रदूषण के बारे में भी जानकारी दी है, कि विकिरण सम्बन्धी प्रदूषण आमतौर पर वायुमण्डल में अथवा समुद्र के गर्भ में किए जाने वाले परमाणु परीक्षण के फलस्वरूप रेडियो सक्रिय पदार्थो के वातावरण में प्रवेश करने से आता है। कीटाणुनाशकों और खाद्य संरक्षण से सम्बन्धित पदार्थों का पञ्जीकरण और उनके प्रयोग पर नियन्त्रण किया जाए। इस प्रक्रिया में उद्योग के सभी चरणों में सफाई की व्यवस्था और राष्ट्रीय खाद्य मानकों का निर्धारण हो। पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाना प्रत्येक मानव का प्राथमिक कर्त्तव्य है। ऐसा करके हम वर्तमान मानव समाज का हित कर सकते हैं व भावी पीढ़ी के लिए स्वच्छ मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त धूल कणों, रासायनिक खादों एवं कीटनाशक से उत्पन्न प्रदूषण से होने वाले खतरों के प्रति चिन्ता व्यक्त की गई है। घरों में प्लास्टिक का कूड़ा जलाने से भी विषैला धुआँ उठता है। बच्चों के लिए बनाए गए प्लास्टिक के खिलौनों में 'कैडमियम' नामक पदार्थ होता है जो ऐसा धुआँ देता है जिससे केंसर हो सकता है। खिलौनों को बच्चे मुँह में लेकर न चबाएँ, इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। घर में आम जरूरत की चीजों- जैसे कपड़े धोने के पाउडर, फर्श चमकाने के रसायन इत्यादि में घातक तत्त्व मौजूद रहतें हैं जिनसे चर्मरोग होने का खतरा बना रहता है।

महिलाएँ घरेलू स्वच्छता एवं खाद्य तथा अन्य पदार्थो के उपयोग में व्यक्तिगत रूप से ध्यान देकर पर्यावरण एवं प्रदूषण नियन्त्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।७ पहले अध्याय में शिक्षित युवकों की बेरोजगारी को लेकर चिन्ता व्यक्त की है। उत्पादन के साधनों की जानकारी उपलब्ध कराते हुए युवकों को नई स्फूर्ति, शक्ति नई ऊर्जा का उपयोग ऐसे कार्य में करने हेतु प्रेरित किया है जिसके साथ-साथ काम से देश व समाज को भी लाभ हो।

इसमें लघु उद्योग धन्धों की सलाह भी दी है। उत्पादन से जीवन सुखमय होकर देश में नया प्रकाश फैलने की कामना की गई है। गाँवो से पलायन की प्रवृति को रोकने एवं ग्रामीण युवकों को नये ढंग से खेती करने की सलाह दी गई। इसके अतिरिक्त दुग्ध व्यवसाय, मुर्गी पालन हथकरघा, बर्तन, खिलौने बनाना जैसे व्यवसायों को अपनाने की शिक्षा दी है।

लेखक ने शहरों की ओर जाने वाले ग्रामीणों की भ्रांति दूर करने का प्रयास किया है कि शहर गाँव से बड़े नहीं होते बल्कि गाँवों के बल पर शहर जीवित है, क्योंकि वास्तविक धन का उत्पादन जिसे अनाज कहते है, गाँवों में ही होता है। लेखक ने महात्मा गाँधी के विचारों को उद्धृत कर ग्रामीणों को गाँव की अमूल्य विधि से परिचित कराने का प्रयास किया है-" भारत शहरों में ही नहीं गाँवों में होता है। अतः गाँव के लोगों को काम धन्धों की तलाश में शहर जाना छोड़ देना चाहिए। उन्हें गाँवों में ही रहकर खेती करनी चाहिए। गाँवों के उद्योग धन्धों में लगना चाहिए। स्वराज्य स्थापित होने पर मैं प्रयत्न करूँगा कि गाँव के प्रत्येक आदमी को करने के लिए काम गाँव में ही मिल जाया करे।"

इस प्रकार बाल-साहित्य में बालकों के लिए सामयिक संदर्भों मे महत्त्वपूर्ण बाल-साहित्य लिखा जा रहा है,जो बालकों के विकास में सहायक है।आज अभिभावक पाठ्य पुस्तकों के अलावा बाल साहित्य की आवश्यकता को महसूस कर रहे हैं। क्योंकि वह बालकों की आयु व बौद्धिक स्तर के साथ-साथ रोचकता , तथ्यात्मकता, विषयानुरूपता के साठ सहज सुलभ हो रहा है। इन्ही आवश्यकताओं को परिपूर्ण करते हुए रचनाकार अनुभव, शब्द सामर्थ्य और प्रस्तुति की क्षमता के साथ-साथ बालकों के मनोविज्ञान को समझकर उनके जीवन से संबंध स्थापित करने में सफल हो रहे है। अतः बाल साहित्य, बाल मनोविज्ञान, लोक जीवन, लोक संस्कृति तथा ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के गहन अध्ययन और बालकों के जीवन के यथार्थ को स्पर्श कर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है

संदर्भ:---

१. प्रेमचन्द गोस्वामी,जात-पाँत अभिशाप है पृ.स. 11

२. रोहिताश्व अस्थाना, काफिलों का सूरज पृ.सं. 48

३. रोहिताश्व अस्थाना, काफिलों का सूरज पृ.सं. 58

४. रोहिताश्व अस्थाना सुनो कहानी, गुणो कहानी, बाल कथा संग्रह की कौआ और बन्दर पृ. स. 25

५. उषा गोयल 'हमारा पर्यावरण' पृ. स. 9

६ उषा गोयल 'हमारा पर्यावरण' पृ.स. 16

७. सोमनाथ, उत्पादन बढ़ाइए गरीबी हटाइए पृ.स. 15